Hand-writing
(Part-1)

नाव बनाओ नाव बनाओ summary

सारांश

नाव बनाओ नाव बनाओ पाठ या कविता में कवि 'हरिकृष्णदास गुप्त' जी के द्वारा बरसात के मौसम का चित्रण किया गया है। पानी की बूँदे जब आसमान से धरती पर पड़ती हैं, तो बच्चों के अंदर जो हर्षोल्लास का भाव जागता है, उसे भी बहुत रोचकता के साथ चित्रण किया गया है। इस कविता के अनुसार, बरसात के मौसम का आगमन हुआ है। धरती पर बारिश होने वाली है। एक बच्चा अपने भैया से नाव बनाने को कह रहा है। आगे बच्चा कहता है कि आकाश में बादल छाए गए हैं। मानो सात समुंदर का पानी वो भरकर लाए हैं। वह अपने भैया से रस का सागर भर कर लाने को कहता है। अर्थात् ऊबाऊ मन को त्यागकर पानी की बूँदों के साथ मस्ती करने का मन।

आगे वह बच्चा उत्साहित मन से कहता है कि पानी सचमुच खूब पड़ेगा। ऐसा लगता है मानों सड़क, घर सबकुछ पानी से भर जाएगा। एक नदी सा दृश्य दिखाई देने लगेगा। फिर वह अपने भैया से कहता है कि तुम भी जल्दी से नाव बनाओ और चलो हम मिलकर अपने नाव को लहराते हैं।

आगे वह बालक अपने भैया से कहता है कि तुम अपने गुल्लक से पैसे निकालकर बाजार से नाव बनाने के लिए रंग-बिरंगा कागज ले आओ। जल्दी से कैंची चलाओ और नाव बनाओ। ताकि हम भी इस बरसात का आनन्द ले पाएँ।

2.